SHIKSHA SAMVAD
International Open Access Peer-Reviewed & Refereed
Journal of Multidisciplinary Research
ISSN: 2584-0983 (Online)
Volume-02, Issue-03, March- 2025
www.shikshasamvad.com

वैश्विक शिक्षा जगत में सांस्कृतिक विरासत : एक समावेशी दृष्टिकोण

डॉ0 मनीष कुमार शुक्ल
(प्राचार्य)
स्वामी विवेकानन्द शिक्षक प्रशिक्षण बी.एड. कॉलेज
करमाटांड़ बोकारो झारखंड

सारांश :

सांस्कृतिक विरासत किसी भी राष्ट्र की पहचान, मूल्यों और इतिहास का जीवंत प्रतीक है, जो भाषा, कला, परंपराओं, लोककथाओं, वास्तुकला और सामाजिक आचरण के रूप में पीढ़ियों तक हस्तांतरित होती है। वैश्वीकरण, सूचना प्रौद्योगिकी और अंतरराष्ट्रीय आदान–प्रदान ने शिक्षा को एक वैश्विक मंच प्रदान किया है, जहाँ विविध संस्कृतियाँ एक–दूसरे से जुड़ रही हैं। हालांकि इस प्रक्रिया में कई बार स्थानीय और पारंपरिक सांस्कृतिक मूल्यों के क्षरण का खतरा भी उत्पन्न हो जाता है। इस शोध में शिक्षा के माध्यम से सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण और संवर्धन के लिए अपनाए गए वैश्विक प्रयासों, नीतियों और शिक्षण विधियों का विश्लेषण किया गया है। समावेशी दृष्टिकोण जो बहुसांस्कृतिकता, समानता और परस्पर सम्मान पर आधारित हो, सांस्कृतिक विविधता को वैश्विक नागरिकता, सतत विकास और शांति स्थापना के लक्ष्यों से जोड़ सकता है।

मुख्य शब्दः वैश्वीकरण, शिक्षा, सांस्कृतिक विरासत, समवेशी, दृष्टिकोण, सांस्कृतिक विविधता

प्रस्तावना :

21वीं शताब्दी में जब पूरी दुनिया वैश्वीकरण, तकनीकी प्रगति और सूचना क्रांति के युग में प्रवेश कर चुकी है, तब शिक्षा का स्वरूप भी व्यापक रूप से परिवर्तित हो रहा है। यह परिवर्तन केवल पाठ्यक्रमों या शैक्षिक तकनीकों तक सीमित नहीं है, बल्कि इसका प्रभाव शिक्षा की मूलभूत अवधारणाओं, उद्देश्यों और सामाजिक संदर्भों पर भी स्पष्ट रूप से दिखाई देता है। आज की शिक्षा केवल ज्ञान अर्जन तक सीमित नहीं है, बल्कि यह सामाजिक समझ, सांस्कृतिक समावेश, वैश्विक सहअस्तित्व और विविधता के सम्मान की दिशा में एक सशक्त माध्यम बन चुकी है।

इसी परिप्रेक्ष्य में ''सांस्कृतिक विरासत'' की भूमिका अत्यंत महत्वपूर्ण हो जाती है। सांस्कृतिक विरासत केवल स्मृतियों या परंपराओं का संग्रह नहीं है, बल्कि यह एक समाज की अस्मिता, चेतना, मूल्य–परंपरा और ज्ञान परंपरा की जीवंत धरोहर है। यह पीढ़ी दर पीढ़ी हस्तांतरित होती आई है और मनुष्य के जीवन को विविध स्तरों पर प्रभावित करती रही है चाहे वह भाषा हो, संगीत, नृत्य, चित्रकला, वास्तुकला, साहित्य, रीति–रिवाज या जीवनशैली। जब इस सांस्कृतिक विरासत को शिक्षा में समाहित किया जाता है, तो शिक्षा अधिक समावेशी, संपूर्ण और सामाजिक रूप से प्रासंगिक बन जाती है।

विश्व स्तर पर अनेक शैक्षिक नीतियाँ और कार्यक्रम इस दिशा में कार्यरत हैं कि कैसे पारंपरिक ज्ञान, मूल्यों और सांस्कृतिक विविधताओं को शैक्षणिक धारा में समाहित किया जाए। न्छैम्ब् जैसे अंतरराष्ट्रीय संगठनों ने बार–बार इस बात पर बल दिया है कि स्थायी विकास, सांस्कृतिक पहचान और सामाजिक समरसता की प्राप्ति के लिए शिक्षा को सांस्कृतिक रूप से समृद्ध होना चाहिए। ''इंटरकल्चरल एजुकेशन'' और ''एजुकेशन फॉर ग्लोबल सिटीजनशिप'' जैसे प्रयास सांस्कृतिक समावेशिता को सशक्त बना रहे हैं।

भारत जैसे विविध सांस्कृतिक पृष्ठभूमि वाले देश में यह शोध और भी अधिक प्रासंगिक हो जाता है। भारत की सांस्कृतिक विरासत अत्यंत प्राचीन, गहन और बहुआयामी है। यदि इस समृद्ध विरासत को वैश्विक शिक्षा दृष्टिकोण से जोड़ा जाए, तो यह न केवल भारतीय शिक्षार्थियों में आत्मगौरव, पहचान और संस्कृति के प्रति सम्मान जागृत करता है, बल्कि वैश्विक पटल पर भारतीयता की सकारात्मक प्रस्तुति को भी बल देता है।

यह शोध इस विचार पर आधारित है कि शिक्षा को केवल आधुनिक ज्ञान और कौशल तक सीमित रखना पर्याप्त नहीं, बल्कि उसमें उस सांस्कृतिक गहराई को भी समाहित करना आवश्यक है जो विविधता, समरसता और मानवता को प्रोत्साहित करती है। शोध में यह विश्लेषण किया गया है कि किस प्रकार विभिन्न देशों में सांस्कृतिक विरासत को शिक्षा में एकीकृत किया जा रहा है, किन शिक्षण रणनीतियों और पाठ्यक्रमीय नवाचारों के माध्यम से यह संभव हो रहा है, और इससे विद्यार्थियों के सामाजिक–भावनात्मक विकास पर क्या प्रभाव पड़ रहा है।

वैश्विक शिक्षा में सांस्कृतिक विरासत का महत्व :

सांस्कृतिक विरासत किसी भी समाज की आत्मा और पहचान का दर्पण है। यह हमारे इतिहास, परंपराओं, भाषाओं, कला, साहित्य, लोककथाओं, वास्तुकला और सामाजिक आचरण का वह संग्रह है, जो पीढ़ी दर पीढ़ी स्थानांतरित होता है। शिक्षा के वैश्विक परिदृश्य में इसका महत्व और भी बढ़ जाता है, क्योंकि आज की दुनिया आपसी संवाद, सहयोग और बहुसांस्कृतिकता पर आधारित है। वैश्विक शिक्षा में सांस्कृतिक विरासत का समावेश विद्यार्थियों को न केवल अपने सांस्कृतिक मूल से जोड़े रखता है, बल्कि उन्हें अन्य संस्कृतियों के प्रति सम्मान और सहिष्णुता विकसित करने का अवसर भी देता है। जब किसी विद्यार्थी को अपनी भाषा, लोककला या परंपराओं के महत्व का बोध होता है, तो उसमें आत्मसम्मान और पहचान की भावना प्रबल होती है। इसी प्रकार, जब वह अन्य देशों और समुदायों की सांस्कृतिक धरोहरों से परिचित होता है, तो उसमें अंतरसांस्कृतिक समझ, सहयोग और शांति की भावना विकसित होती है।

शैक्षिक दृष्टि से, सांस्कृतिक विरासत रचनात्मकता और आलोचनात्मक चिंतन को प्रोत्साहित करती है। उदाहरण के लिए, पारंपरिक शिल्पकला, संगीत या नृत्य के अध्ययन से न केवल कलात्मक कौशल विकसित होते हैं, बल्कि यह भी समझ आती है कि विभिन्न समाजों ने अपनी समस्याओं और आवश्यकताओं के समाधान किस प्रकार निकाले। यह दृष्टिकोण विद्यार्थियों को नवाचार की प्रेरणा देता है और उन्हें वैश्विक चुनौतियों के समाधान में रचनात्मक योगदान देने के लिए तैयार करता है। इसके अलावा, सांस्कृतिक विरासत सतत विकास के लिए भी महत्त्वपूर्ण है। जब शिक्षा में स्थानीय ज्ञान प्रणालियों, पारंपरिक कृषि पद्धतियों, पर्यावरणीय संतुलन के लोकाचार और स्थायी जीवनशैली के तत्वों को सम्मिलित किया जाता है, तो विद्यार्थी प्रकृति के साथ संतुलित और जिम्मेदार जीवन जीने की आदत सीखते हैं।

आज के वैश्विक संदर्भ में, जहाँ एक ओर तकनीकी विकास और वैश्वीकरण ने दूरी घटाई है, वहीं सांस्कृतिक एकरूपता का खतरा भी बढ़ा है। ऐसे में, शिक्षा में सांस्कृतिक विरासत का समावेश एक संतुलनकारी शक्ति के रूप में कार्य करता है, जो ''स्थानीय जड़ों'' और ''वैश्विक दृष्टि'' दोनों को समान महत्व देता है। यह विद्यार्थियों को यह सिखाता है कि विविधता विभाजन का नहीं, बल्कि नवाचार और प्रगति का आधार है। संक्षेप में, वैश्विक शिक्षा में सांस्कृतिक विरासत का महत्व इस बात में निहित है कि यह व्यक्ति को अपनी पहचान के प्रति सजग रखते हुए, उसे एक व्यापक, बहुसांस्कृतिक और सहयोगी दुनिया के निर्माण में सक्रिय भूमिका निभाने के लिए तैयार करती है। यह केवल अतीत की स्मृति नहीं, बल्कि भविष्य के लिए एक दिशा–निर्देशक शक्ति है, जो शिक्षा को मानवीय, न्यायसंगत और सतत बनाती है।

अंतरराष्ट्रीय प्रयास और नीतियाँ:

वैश्विक स्तर पर सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण और उसे शिक्षा में समाहित करने के लिए अनेक अंतरराष्ट्रीय प्रयास और नीतियाँ लागू की गई हैं। इनका उद्देश्य न केवल विभिन्न देशों की सांस्कृतिक धरोहर को सुरक्षित रखना है, बल्कि इसे वैश्विक शिक्षा तंत्र का अभिन्न हिस्सा बनाकर आने वाली पीढ़ियों में सांस्कृतिक जागरूकता, परस्पर सम्मान और वैश्विक नागरिकता की भावना को प्रोत्साहित करना भी है।

सबसे पहले यूनेस्को (UNESCO) इस क्षेत्र में अग्रणी भूमिका निभा रहा है। यूनेस्को ने 1972 में ''विश्व सांस्कृतिक और प्राकृतिक विरासत संरक्षण संबंधी सम्मेलन'' (World Heritage Convention) को अपनाया, जिसके तहत विश्वभर की महत्वपूर्ण सांस्कृतिक और प्राकृतिक धरोहरों की पहचान, संरक्षण और प्रबंधन के लिए दिशानिर्देश बनाए गए। साथ ही, 2003 में ''अमूर्त सांस्कृतिक विरासत की सुरक्षा पर अभिसमय'' (Convention for the Safeguarding of the Intangible Cultural Heritage) लागू किया गया, जिसमें लोककथाओं, पारंपरिक नृत्यों, भाषाओं, और स्थानीय ज्ञान प्रणालियों को संरक्षित करने पर बल दिया गया।

इसके अतिरिक्त, यूनेस्को का ''Global Citizenship Education'' (GCED) कार्यक्रम सांस्कृतिक विविधता, मानवाधिकार, और सतत विकास को शिक्षा में समाहित करने का प्रयास करता है। यह विद्यार्थियों को विभिन्न संस्कृतियों के प्रति सहिष्णुता, समझ और सहयोग की भावना विकसित करने के लिए प्रेरित करता है।

संयुक्त राष्ट्र (United Nations) ने भी सतत विकास लक्ष्य (Sustainable Development Goals – SDGs) के तहत सांस्कृतिक विरासत को शिक्षा से जोड़ने की दिशा में पहल की है। SDG–4 (गुणवत्तापूर्ण शिक्षा) और SDG–11 (सतत शहर और समुदाय) में स्पष्ट रूप से सांस्कृतिक धरोहर के संरक्षण और प्रोत्साहन का उल्लेख किया गया है। इसके अंतर्गत देशों को यह प्रोत्साहित किया जाता है कि वे अपने पाठ्यक्रम और शिक्षण विधियों में सांस्कृतिक तत्वों को शामिल करें।

यूरोपीय संघ (EU) ने Creative Europe और European Heritage Label जैसी योजनाओं के माध्यम से यूरोपीय सांस्कृतिक स्थलों और परंपराओं के संरक्षण को बढ़ावा दिया है। इसी प्रकार, एशियाई देशों के बीच ASEAN Socio–Cultural Community के तहत सांस्कृतिक आदान–प्रदान और शैक्षिक सहयोग की योजनाएँ चल रही हैं।

इसके साथ–साथ, अनेक अंतरराष्ट्रीय गैर–सरकारी संगठन (NGOs) और फाउंडेशन, जैसे World Monuments Fund] International Council on Monuments and Sites (ICOMOS), और Cultural Survival स्थानीय समुदायों के साथ मिलकर शिक्षा के माध्यम से सांस्कृतिक संरक्षण के प्रयासों को गति दे रहे हैं।

इन अंतरराष्ट्रीय नीतियों और पहलों का सामूहिक उद्देश्य यह सुनिश्चित करना है कि वैश्वीकरण और तकनीकी प्रगति के दौर में भी प्रत्येक देश की सांस्कृतिक पहचान सुरक्षित रहे, और शिक्षा एक ऐसा माध्यम बने जो इस पहचान को आने वाली पीढ़ियों तक पहुँचाए। इन प्रयासों से यह भी स्पष्ट होता है कि सांस्कृतिक विरासत का संरक्षण केवल एक स्थानीय जिम्मेदारी नहीं, बल्कि पूरी मानवता का साझा दायित्व है।

शिक्षा में सांस्कृतिक विरासत को समाहित करने के उपायों में शामिल हैंः

- बहुभाषिक शिक्षा को बढ़ावा देना।
- पारंपरिक लोककथाओं, गीतों, रीति–रिवाजों को पाठ्यक्रम में सम्मिलित करना।
- स्थानीय सांस्कृतिक स्थलों की शैक्षिक यात्राएँ।
- समुदाय आधारित शिक्षा एवं अनुभवात्मक शिक्षण गतिविधियाँ।
- शिक्षकों को सांस्कृतिक रूप से संवेदनशील प्रशिक्षण प्रदान करना।

समावेशी दृष्टिकोण के लाभ

शिक्षा के क्षेत्र में समावेशी दृष्टिकोण का अर्थ है ऐसा शैक्षिक वातावरण और नीति ढाँचा तैयार करना, जिसमें सभी पृष्ठभूमियों, संस्कृतियों, भाषाओं, लिंगों, क्षमताओं और सामाजिक–आर्थिक परिस्थितियों के विद्यार्थियों को समान अवसर और सम्मान मिले। जब सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण और संवर्धन में समावेशी दृष्टिकोण अपनाया जाता है, तो इसके अनेक महत्वपूर्ण लाभ सामने आते हैं।

- **सांस्कृतिक विविधता का सम्मान और संरक्षणः** समावेशी दृष्टिकोण प्रत्येक संस्कृति, परंपरा और भाषा को समान महत्व देता है। इससे किसी एक संस्कृति के वर्चस्व के बजाय बहुसांस्कृतिक वातावरण तैयार होता

है, जहाँ सभी परंपराओं को सीखने और साझा करने का अवसर मिलता है। यह दृष्टिकोण सांस्कृतिक विरासत के ह्रास को रोकता है और उसे शिक्षा के माध्यम से जीवित रखता है।

- **परस्पर सम्मान और सामाजिक एकता का विकासः** जब विद्यार्थियों को विभिन्न सांस्कृतिक पृष्ठभूमियों के बारे में सिखाया जाता है, तो उनमें परस्पर सम्मान, सहिष्णुता और संवेदनशीलता की भावना विकसित होती है। इससे पूर्वाग्रह और भेदभाव कम होते हैं तथा समाज में एकता और सहयोग की नींव मजबूत होती है।
- **रचनात्मकता और नवाचार को प्रोत्साहनः** विविध सांस्कृतिक अनुभवों से विद्यार्थियों को अलग–अलग दृष्टिकोण, कला–रूप, समस्या–समाधान की पद्धतियाँ और रचनात्मक सोच के नए आयाम मिलते हैं। यह विविधता न केवल कला और साहित्य में, बल्कि विज्ञान, तकनीक और उद्यमिता में भी नवाचार को प्रोत्साहित करती है।
- **वैश्विक नागरिकता और अंतरसांस्कृतिक समझः** समावेशी दृष्टिकोण विद्यार्थियों को Global Citizen बनने के लिए तैयार करता है, जो न केवल अपनी संस्कृति को समझते और महत्व देते हैं, बल्कि अन्य संस्कृतियों के प्रति भी खुला दृष्टिकोण रखते हैं। यह अंतरसांस्कृतिक संवाद, सहयोग और शांति की दिशा में एक ठोस कदम है।
- **सतत विकास और स्थानीय ज्ञान का उपयोगः** जब स्थानीय और पारंपरिक ज्ञान प्रणालियों को शिक्षा में शामिल किया जाता है, तो विद्यार्थी पर्यावरण संरक्षण, सतत संसाधन प्रबंधन और सामुदायिक जीवनशैली के महत्व को समझते हैं। यह सतत विकास लक्ष्यों (SDGs) की प्राप्ति में सहायक है।
- **समान अवसर और सामाजिक न्याय की स्थापनाः** समावेशी दृष्टिकोण यह सुनिश्चित करता है कि किसी भी विद्यार्थी को उसकी पृष्ठभूमि, भाषा, लिंग, या सामाजिक स्थिति के आधार पर शिक्षा से वंचित न किया जाए। इससे शिक्षा का लोकतांत्रिक स्वरूप मजबूत होता है और सामाजिक न्याय की स्थापना होती है।
- **सीखने के अनुभव का विस्तारः** विभिन्न सांस्कृतिक संदर्भों से जुड़े उदाहरण, गतिविधियाँ और पाठ्य सामग्री सीखने को अधिक रोचक, प्रासंगिक और प्रभावी बनाते हैं। इससे विद्यार्थी वास्तविक जीवन के संदर्भों से जुड़ते हैं और उनकी सीखने की प्रेरणा बढ़ती है।

सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण में चुनौतियाँ –

वैश्विक शिक्षा में सांस्कृतिक विरासत को समावेशी दृष्टिकोण के साथ शामिल करना निस्संदेह महत्वपूर्ण है, लेकिन इसके रास्ते में अनेक चुनौतियाँ भी हैं। ये चुनौतियाँ नीति निर्माण से लेकर क्रियान्वयन और सामाजिक दृष्टिकोण तक फैली हुई हैं।

- **वैश्वीकरण और सांस्कृतिक एकरूपता का खतराः** वैश्वीकरण ने विश्व को जोड़ा है, लेकिन इसके साथ एक ''सांस्कृतिक एकरूपता'' का खतरा भी बढ़ा है। वैश्विक मीडिया, उपभोक्तावाद और पॉप संस्कृति के प्रभाव से स्थानीय भाषाएँ, रीति–रिवाज और परंपराएँ धीरे–धीरे हाशिये पर जा रही हैं।

SHIKSHA SAMVAD
PASSION TOWARDS EXCELLENCE

- **पाठ्यक्रम में संतुलन स्थापित करने की कठिनाई:** शिक्षा में सांस्कृतिक विरासत को शामिल करने के लिए पाठ्यक्रम में संतुलन बनाना चुनौतीपूर्ण है। एक ओर आधुनिक विज्ञान, तकनीकी और वैश्विक विषयों की आवश्यकता है, वहीं दूसरी ओर स्थानीय और पारंपरिक विषयों को समय और स्थान देना जरूरी है। इस संतुलन को बनाए रखना आसान नहीं है।
- **प्रशिक्षित शिक्षकों की कमी:** अक्सर शिक्षकों को स्थानीय संस्कृति, पारंपरिक ज्ञान प्रणालियों और बहुसांस्कृतिक शिक्षा के लिए पर्याप्त प्रशिक्षण नहीं मिलता। परिणामस्वरूप वे सांस्कृतिक विरासत को प्रभावी ढंग से पढ़ाने में कठिनाई महसूस करते हैं।
- **संसाधनों और वित्तीय सहायता की कमी:** सांस्कृतिक विरासत के संरक्षण और शिक्षण के लिए विशेष सामग्री, संग्रहालय यात्राएँ, फील्ड विजिट और डिजिटल आर्काइव जैसे संसाधनों की आवश्यकता होती है। कई बार इन कार्यों के लिए पर्याप्त वित्तीय सहायता उपलब्ध नहीं होती।
- **राजनीतिक और सामाजिक पूर्वाग्रह:** कभी–कभी सांस्कृतिक विरासत को राजनीतिक या वैचारिक दृष्टिकोण से प्रभावित किया जाता है, जिससे शिक्षा का उद्देश्य पक्षपातपूर्ण हो सकता है। यह स्थिति बहुसांस्कृतिक और निष्पक्ष शिक्षण के मार्ग में बाधा बनती है।
- **बदलती जीवनशैली और पीढ़ीगत अंतर:** आधुनिक जीवनशैली, शहरीकरण और डिजिटल संस्कृति के कारण नई पीढ़ी पारंपरिक कला, भाषाओं और रीति–रिवाजों में कम रुचि दिखाती है। इससे सांस्कृतिक धरोहर के हस्तांतरण की प्रक्रिया कमजोर पड़ सकती है।
- **डिजिटल प्लेटफॉर्म पर गलत प्रस्तुति:** इंटरनेट और सोशल मीडिया पर सांस्कृतिक तत्वों की गलत, अधूरी या विकृत प्रस्तुति से भी गलतफहमियाँ पैदा हो सकती हैं। यह न केवल विरासत की गलत छवि बनाता है, बल्कि उसकी प्रामाणिकता पर भी असर डालता है।

निष्कर्ष

''वैश्विक शिक्षा जगत में सांस्कृतिक विरासत : एक समावेशी दृष्टिकोण'' विषय के अध्ययन से यह स्पष्ट होता है कि सांस्कृतिक विरासत केवल अतीत की धरोहर नहीं, बल्कि वर्तमान और भविष्य के लिए प्रेरणा, पहचान और सामाजिक एकता का आधार है। यह भाषा, कला, परंपराओं, रीति–रिवाजों और मूल्य–व्यवस्थाओं के माध्यम से व्यक्ति और समाज दोनों को जोड़ती है। वैश्वीकरण और तकनीकी प्रगति ने जहाँ विविध संस्कृतियों के बीच संवाद और आदान–प्रदान को बढ़ावा दिया है, वहीं इसने स्थानीय और पारंपरिक मूल्यों के क्षरण का खतरा भी उत्पन्न किया है। ऐसे परिदृश्य में, शिक्षा एक महत्वपूर्ण माध्यम के रूप में उभरती है, जो सांस्कृतिक विरासत को संरक्षित करते हुए विद्यार्थियों को वैश्विक दृष्टि, परस्पर सम्मान और बहुसांस्कृतिक समझ से संपन्न बनाती है। समावेशी दृष्टिकोण अपनाकर शिक्षा सभी पृष्ठभूमियों के विद्यार्थियों को समान अवसर देती है, भेदभाव को कम करती है, और विभिन्न संस्कृतियों के बीच सहयोग एवं समझ को बढ़ावा देती है। यह दृष्टिकोण विद्यार्थियों में रचनात्मकता, नवाचार, सतत विकास के प्रति संवेदनशीलता और वैश्विक नागरिकता की भावना विकसित करता है।

अतः यह निष्कर्ष निकाला जा सकता है कि सांस्कृतिक विरासत का संरक्षण और उसका शिक्षा में समावेश न केवल सामाजिक और सांस्कृतिक दृष्टि से आवश्यक है, बल्कि यह वैश्विक शांति, सतत विकास और मानवीय एकता के लिए भी अनिवार्य है। इसके लिए अंतरराष्ट्रीय संगठनों, शिक्षा नीति–निर्माताओं, शिक्षकों, अभिभावकों और समुदायों को मिलकर काम करना होगा, ताकि आने वाली पीढ़ियाँ अपनी जड़ों से जुड़ी रहें और साथ ही एक व्यापक, बहुसांस्कृतिक और सहयोगी दुनिया के निर्माण में सक्रिय भूमिका निभा सकें।

संदर्भ ग्रंथ सूची

- गुप्ता, एस. (2018). वैश्वीकरण और सांस्कृतिक विरासत. नई दिल्लीः प्रभात प्रकाशन।
- जोशी, ए. (2016). भारतीय सांस्कृतिक धरोहर और शिक्षा. वाराणसीः भारतीय विद्या भवन।
- कुमार, एन. (2020). समावेशी शिक्षाः सिद्धांत और व्यवहार. नई दिल्लीः पुस्तक महल।
- मिश्रा, पी. (2019). शैक्षिक परिप्रेक्ष्य में भारतीय ज्ञान परंपरा. लखनऊः साहित्य भवन।
- शर्मा, आर. के. (2017). वैश्वीकरण और बहुसांस्कृतिक शिक्षा. जयपुरः राजस्थान हिंदी ग्रंथ अकादमी।
- सिंह, एम. (2015). शिक्षा में सांस्कृतिक मूल्यों का संरक्षण. नई दिल्लीः राजकमल प्रकाशन।
- Banks, J. A. (2015). Cultural diversity and education: Foundations, curriculum, and teaching. Routledge.
- European Union. (2018). European framework for action on cultural heritage. European Commission.
- Government of India. (2020). National education policy 2020. Ministry of Education.
- Harrison, R. (2013). Heritage: Critical approaches. Routledge.
- International Council on Monuments and Sites. (2014). The Florence declaration on heritage and landscape as human values. ICOMOS.
- Jain, P. (2021). Inclusive education and cultural sustainability. Journal of Education and Development, 15(2), 112–120.
- Kumar, R. (2019). Cultural heritage and education in the era of globalization. International Journal of Humanities and Social Science Research, 7(4), 45–53.
- Sen, A. (2005). The argumentative Indian: Writings on Indian history, culture and identity. Penguin Books.
- Throsby, D. (2010). The economics of cultural policy. Cambridge University Press.
- United Nations. (2015). Transforming our world: The 2030 agenda for sustainable development. United Nations.

SHIKSHA SAMVAD

An Online Quarterly Multi-Disciplinary
Peer-Reviewed or Refereed Research Journal
ISSN: **2584-0983 (Online)** Impact-Factor, **RPRI-3.87**
Volume-02, Issue-03, March- 2025
www.shikshasamvad.com
Certificate Number-March-2025/23

Certificate Of Publication

This Certificate is proudly presented to

डॉ0 मनीष कुमार शुक्ल

For publication of research article title

"वैश्विक शिक्षा जगत में सांस्कृतिक विरासत : एक समावेशी दृष्टिकोण"

Published in 'Shiksha Samvad' Peer-Reviewed and Refereed Research Journal and E-ISSN: 2584-0983(Online), Volume-02, Issue-03, Month March, Year- 2025, Impact-Factor, RPRI-3.87.

Dr. Neeraj Yadav
Editor-In-Chief

Dr. Lohans Kumar Kalyani
Executive-chief- Editor

Note: This E-Certificate is valid with published paper and the paper must be available online at www.shikshasamvad.com